वो ऐतिहासिक किस्सा जिसके कारण लोहागढ नरेश महाराजा सूरजमल अफलातून कहलाए!

बात तब की है जब दिल्ली पर मुगल बादशाह अहमदशाह का राज था बादशाह के दरबार मेँ एक पंडित जी रहते थे| उनकी पत्नी रोज अपने पति का खाना ले जाया करती थी। एक दिन पंडित जी की बेटी हरदौल अपने पिता का खाना ले के गई| हरदौल जब वापस घर चली गई तो बादशाह ने पंडित को पूछा कि क्या यह तेरी बेटी है?

तब पंडित बोले हाँ। तो बादशाह बोला तूने अब तक ये बात हमसे छुपाई कोई बात नहीं पर सुन हरदौल हमारे दिल को छू गई है, मै उसे अपनी बेगम बनाना चाहता हूँ| पंडित बोले हुजूर दया करो, ऐसा मत सोचो वह आपकी बेटी है। तो बादशाह बोला कि बेटी थी पंडित, पर अब कुछ अलग है। पंडित जी गिडगिडाने लगे और बादशाह के पैरोँ मेँ गिर गए| लेकिन पत्थर दिल में दया कहाँ, बादशाह बोला सुन सात दिन मेँ हरदौल का डोला ले लिया जाएगा|

पंडित रात को घर पहुंचे और चिंता की लकीरें माथे पर ले के बैठ गए तो पंडितानी और बेटी ने पूछा तो उनकी आँखोँ से आंसुओँ की धार बह निकली, इसपर हरदौल बोली पिताजी क्या हुआ है बताओ| तो पिता ने सारा दुखड़ा बेटी को रो दिया। बेटी बोली पिताजी मैं धर्म नहीं बदलूंगी चाहे जान चली जाए|

पंडित-पंडितानी को रोते-2 2 रात निकल गई| सुबह बादशाह के सैनिकोँ ने पंडित के घर को छावनी बना दिया और बादशाह ने आदेश दिया कि पंडित फालतु बोले तो उसके घर में आग लगा देना| फिर एक राजकीय सलाहकार ने बादशाह को सलाह दी कि आग लगाने से फायदा नहीं अपितु हरदौल को जेल में डाल दिया जाए और वह मारपीट खा के निकाह के लिए राजी हो जाएगी| तो बादशाह ने हरदौल को जेल में डलवा दिया और यातनाएं दी जाने लगी| दूसरे दिन एक भंगी हरिजन की औरत जो कि महल में झाड़ु लगाने आती थी, वो छुप के हरदौल से मिली|

तो उस औरत ने हरदौल को बताया कि बेटी कोई भी हिन्दू राजा दिल्ली के बादशाह के विरुद्ध तेरी सहायता करने नहीं आएगा सिवाय लोहागढ के महाराजा सूरजमल के, जो कि जाट का पूत है तू उसको पत्र लिख वो जाटवीर तेरी जरूर सुनेगा|

जेल मे कलम नहीं थी तो भंगी औरत एक मोर के पंख का टुकडा लाई और हरदौल ने अपने खून से पत्र लिखा| लिखते-2 आंसू भी पत्र पर गिर गए थे। हरदौल ने औरत को अपने घर का पता बताके पत्र उसको सौंप दिया और भंगी औरत ने पत्र पंडित-पंडितानी को दे दिया और कहा जाओ लोहागढ और अपनी बेटी की इज्जत के रक्षक को ये पत्र पहुँचाओ। जहाँ हर फरियादी की फरियाद सुनी जाती है उस जाट दरबार में आपकी भी सुनी जाएगी। तो पंडितानी पत्र को ले के जाट दरबार में पहुँच जाती है| पत्र में वो मोर का पंख भी रखा था|

जाट दरबार सजा हुआ था और पंडितानी दहाड़ मार-2 के रोने लगी, तो महाराज सूरजमल बोले कि यह दुखिया कौन हैं इनकी फरियाद सुनी जाए तो एक मंत्री ने पत्र पढ के राजा को सुनाया। तो सूरजमल ने कहा कि बस माता जी आप वापस दिल्ली जाएँ और पंडितानी के साथ वीरपाल नाम के गुज्जर सैनिक को दिल्ली के बादशाह के नाम संदेशा दे के भेजा और कहलवाया कि बादशाह को कहना कि, "या तो हरदौल को छोड़ वर्ना दिल्ली छोड़।"

तो वीरपाल गुज्जर मुगल दरबार में पहुचा और बादशाह को भरतपुर नरेश का सन्देश सुनाया तो मुग़ल बादशाह हंसते हुए कहता है कि, "हमें मालूम था कि सूरजमल जरुर हमसे पंगा लेगा, ठीक है सुनो वीरपाल, सूरजमल से कहना कि जाटनी भी साथ लाए पंडितानी तो क्या छुडाएगा वो?"

बस फिर क्या था वीरपाल ने दरवार में ही तलवार का कहर छोड़ दिया और मुगलों से लडते-2 वीरगति को प्राप्त हो गए।

वीरगति प्राप्त करते-करते एक बात मुग़ल बादशाह को कह गए कि, "तू तो क्या जाटनी लैगो पर तेरी नानी याद दिला जाएगौ वो पूत जाटनी कौ जायौ है|"

और जब यह खबर भरतपुर मे महाराजा सूरजमल को मिली तो वो आग बबूला हो गये और ललकार उठे, "अरे आंवे लोहागढ के जाट और दिल्ली की हिला दो चूल और पाट"!

उत्तर में रोहतक से ले पूर्व में गुडगाँव-फरीदाबाद-मथुरा दक्षिण में जयपुर और पश्चिम में सिवनी-मंडी, हिसार तक उस वक्त लोहागढ़ रियासत होती थी|

और जल्दी ही दिल्ली पर चढाई करने की तैयारी कर ली गई| आज जहाँ गुडगांव बसा हुआ है वहाँ जाट-फ़ौज ने अपना डेरा डाल दिया और महाराजा संदेशवाहक को बोले कि, "बादशाह को कहो जाट सूरमे आये हैं अपनी बेटी की इज्जत बचाने को और साथ में जाटनी (भरतपुर की महारानी हिंडौली) को भी लाये हैं, देखें वो जाटनी को ले जाता है या हमारी बेटी को वापिस देने के साथ-साथ खुद घुटनों के बल आता है?"

तो बादशाह अपनी सेना ले के मैदान मे आ जाता है और भीषण युद्ध होने लगता है| तो कुछ ही देर में जाट-सेना ने ऐसा अफलातून मचाया कि मुगलों के छक्के छूट गए और बादशाह को चाल सूझी एवं जाट अफलातून महाराजा सूरजमल के पैरों में गिरके गिडगिडाने लगा और सूरजमल को गाय की सौगंध खिलाने लग जाता है जिससे महाराज सूरजमल का ह्रदय पिगल जाता है और युद्ध समाप्त हो जाता है और हरदौल मुग़ल बादशाह की कैद से आज़ाद करा ली जाती है।

युद्ध के उपरांत महाराजा सूरजमल ने हरदौल की शादी करवाई और शादी पूरा खर्च भी वहन किया| और यही वो किस्सा था जिसके बाद महाराजा सूरजमल अफलातून कहलाये। मुग़ल उनका नाम सुनते ही काँप जाया करते थे और कर्कश ही कह उठाते थे:

तीर चलें, तलवार चलें, कटारें चलें इशारों तैं,

अल्लाह-मियां भी बचा नहीं सकदा जाट भरतपुर आळए तैं|

हरदौल के ब्याह के उपरांत मुग़ल बादशाह ने महाराजा सूरजमल को बोला कि अब हमारी लडाई नहीं है सो कुछ दिन दिल्ली की शाही मेहमान-नवाजी स्वीकारें और अपनी उन्हीं जाटनी महारानी के साथ जिसके बारे युद्ध से पहले बादशाह पंडितानी तो क्या जाटनी भी दे जाने की बात कही थी भरतपुर महाराज ने दिल्ली बादशाह का न्योता स्वीकार कर लिया|

Nidana Heights

17/10/2013